सूरह मरियम

तम्हीदी कलिमात

सूरह मरियम "मक्की-मदनी" सूरतों के तीसरे ग्रुप में शामिल है। इस ग्रुप की मक्कियात का आग़ाज़ सूरह युनुस से हुआ था। इनमें से जिन नौ सूरतों का हम अब तक मुताअला कर चुके हैं वह तीन-तीन के तीन ज़ेली ग्रुप्स में मुनक़सिम हैं। हर ज़ेली ग्रुप के अन्दर दो-दो सूरतें जोड़े की शक्ल में हैं, जबकि तीसरी सूरत मुनफ़रिद मिज़ाज की हामिल है। मसलन पहले ज़ेली ग्रुप में सूरह युनुस और सूरह हूद जोड़े की हैसियत से हैं, जबकि सूरह युसुफ़ (एक ही नबी यानि हज़रत युसुफ़ अलै. के हालात पर मुश्तमिल) मुनफ़रिद है। दूसरे ज़ेली ग्रुप में सूरतुल रअद और सूरह इब्राहीम जोड़े की शक्ल में हैं, जबकि सूरतुल हिज्र मुनफ़रिद है, बल्कि सूरतुल हिज्र तो इस पूरे ग्रुप में ही मुनफ़रिद मिज़ाज की सूरत है। इसका अंदाज़ बिल्कुल इब्तदाई ज़माने की सूरतों जैसा है, यानि छोटी-छोटी आयात, तेज़ रिद्हम और मलकूती गनाइयत बहुत नुमायाँ। तीसरे ज़ेली ग्रुप में सूरतुल नहल मुनफ़रिद मिज़ाज रखती है, जबकि सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ एक हसीन व जमील जोड़े की शक्ल में हैं।

अब सूरह मरियम से "मक्की-मदनी" सूरतों के इस बड़े ग्रुप के चौथे ज़ेली ग्रुप का आग़ाज़ हो रहा है, जिसमें सूरह मरियम, सूरह ताहा, और सूरतुल अम्बिया शामिल हैं। पिछले ज़ेली ग्रुप्स की तरह यहाँ भी दो सूरतों (सूरह मरियम और सूरतुल अम्बिया) की आपस में गहरी मुशाबेहत है, जबकि एक सूरत (ताहा) मुनफ़रिद है। सूरह मरियम और सूरतुल अम्बिया दोनों में अम्बिया किराम अलै. का तज़किरा क़ससुन्ननबिय्यीन के अंदाज़ में है। इन तज़किरों में "अम्बिया अर्रुसुल" या "अय्यामुल्लाह" जैसा वह अंदाज़ नहीं जो हम सूरतुल आराफ़ और सूरह हूद में मुलाहिज़ा कर चुके हैं कि रसूल आए, उन्होंने दावत दी, क़ौम ने इन्कार किया और वह क़ौम हलाक कर दी गई।

इस ज़ेली ग्रुप की मुनफ़रिद सूरत यानि सूरह ताहा में सूरह युसुफ़ की तरह सिर्फ़ एक ही रसूल का तज़किरा है। इसके आठ में से पाँच रुकूअ मुसलसल हज़रत मूसा अलै. के हालात पर मुश्तमिल हैं। इस लिहाज़ से सूरह ताहा सूरह युसुफ़ के साथ मअनवी निस्बत भी रखती है। यानि हज़रत युसुफ़ अलै. के ज़माने में बनी इसराइल मिस्र में आकर आबाद हुए (इसका ज़िक्र सूरह युसुफ़ में है), जबकि हज़रत मूसा अलै. के दौर में उन्हें फ़िरऔन की गुलामी से निजात मिली (इसका ज़िक्र सूरह ताहा में है) और वह अपने आबाई वतन फ़लस्तीन की तरफ़ रवाना हुए।

सूरह मरियम हिजरते हब्शा के क़ब्ल नाज़िल हुई। इसके दूसरे रुकूअ में हज़रत मरियम और हज़रत ईसा अलै. का तआरुफ़ बयान फ़रमाया गया है। ये आयात मुसलमान मुहाजरीन को सफ़र-ए-हब्शा के ज़ादे राह के तौर पर अता हुई थीं। अनक़रीब उन्हें शाह-ए-हब्शा (नज्जाशी) के दरबार में पेश आने वाली मुश्किल सूरतेहाल में इन आयात की मदद दरकार थी। हब्शा की तरफ़ हिजरत करने वाले मुसलमानों को वापस लाने के लिये क़ुरैशे मक्का ने अम्र बिन आस (जो बाद में ईमान लाकर जलीलुल क़द्र सहाबी बने रज़ि.) की सरकर्दगी में नज्जाशी के दरबार में एक सफ़ारत भेजी। इन लोगों की शिकायत पर नज्जाशी ने मुसलमानों को दरबार में बुला कर उनसे हक़ीक़ते हाल दरयाफ्त की। मुसलमानों ने जवाब में वह

तमाम हालात बताये जिनकी वजह से वह अपना घर-बार छोड़ कर हब्शा में पनाह लेने पर मजबूर हुए थे। नज्जाशी ने मुसलमानों का मौक़फ़ सुनने के बाद उन्हें क़ुरैश के हवाले करने से इन्कार कर दिया और उन्हें इजाज़त दे दी कि वह उसके मुल्क में जहाँ चाहें रहे सकते हैं। इसके बाद अम्र बिन आस ने एक और दाँव खेला और नज्जाशी के दरबार में दोबारा हाज़िर होकर कहा कि आप इन लोगों को बुला कर हज़रत ईसा अलै. के बारे में इनका अक़ीदा दरयाफ्त करें। ये लोग तो हज़रत ईसा अलै. को एक आम इंसान समझते हैं। इस पर नज्जाशी ने मुसलमानों को एक बार फ़िर अपने दरबार में तलब किया और उनसे पूछा कि हज़रत ईसा अलै. के बारे में उनका अक़ीदा क्या है। इस पर हज़रत ज़ाफर तय्यार रज़ि. बिन अबी तालिब (हुज़ूर ﷺ के चचा ज़ाद और हज़रत अली रज़ि. के भाई) ने हज़रत ईसा अलै. से मुताल्लिक़ सूरह मरियम की आयात पढ़ कर सुनाईं। कलामे इलाही सुन कर नज्जाशी बहुत मुतास्सिर हुआ। उसने एक तिनका उठाया और कहा कि जो कुछ तुमने बयान किया है हक़ीक़त में हज़रत ईसा अलै. इस तिनके के बराबर भी इससे ज़ायद नहीं हैं। इसके बाद उसने क़ुरैश की सफ़ारत को यह कह कर वापस भेज दिया कि मैं इन लोगों को तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता, चाहे तुम लोग मुझे पहाड़ों के बराबर सोना भी दे दो।

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ
بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

आयात 1 से 15 तक

كٓهٰيٰعٓصٓ Á ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا Ą ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَاۗءً خَفِيًّا Æ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ
الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَاۗىِٕكَ رَبِّ شَقِيًّا Ć ۝ وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَاۗءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا Ĉ ۝ يَّرِثُنِيْ
وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ڰ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا Č ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا Ċ ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا Ď ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْـــًٔا Ď ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ١٠ فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ
اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا 11 يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ ۝12 وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ 13 وَّبَرًّۢا
بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝15

आयत 1

كٓهٰيٰعٓصٓ Á ۝

"काफ़, हा, या, ऐन, साद।"

क़ुरान मजीद की यह वाहिद सूरत है जिसके आग़ाज़ में इकठ्ठे पाँच हुरूफ़े मुक़त्तआत हैं। अगरचे सूरतुल शूरा के शुरू में भी पाँच हुरूफ़े मुक़त्तआत हैं, लेकिन वहाँ ये दो आयात में हैं। दो हुरूफ़ (हा मीम) पहली आयत में, जबकि तीन हुरूफ़ (ऐन सीन क़ाफ़) दूसरी आयात में हैं। बहरहाल सूरह मरियम को इस लिहाज़ से इनफ़रादियत हासिल है कि इसके आग़ाज़ में इकठ्ठे पाँच हुरूफ़े मुक़त्तआत आए हैं।

आयत 2

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا Ą ۝

"यह ज़िक्र है आपके रब की रहमत का जो उसने अपने बन्दे ज़करिया अलै. पर की।"

यहाँ ज़िक्र तो हज़रत ईसा अलै. का करना मक़सूद है मगर आपके ज़िक्र से पहले हज़रत याहिया अलै. का ज़िक्र किया जा रहा है, क्योंकि हज़रत याहिया अलै. की विलादत भी तो एक बहुत बड़ा मौज्ज़ा थी। हज़रत ज़करिया अलै. बहुत बूढ़े हो चुके थे और आपकी अहलिया भी ना सिर्फ़ बूढी थीं बल्कि उम्र भर बाँझ भी रही थी। इन हालात में इनके यहाँ बेटे की पैदाइश कोई मामूल का वाक़िया नहीं था। यही वजह है कि इस वाक़िये को यहाँ अल्लाह तआला की रहमते ख़ास का मज़हर क़रार दिया गया है।

आयत 3

إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾

"जब उसने पुकारा अपने रब को चुपके-चुपके।"

यानि हज़रत ज़करिया अलै. ने दिल ही दिल में अपने रब से दुआ की।

आयत 4

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ

"उसने अर्ज़ किया: ऐ मेरे परवरदिगार! बिला शुबह मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं"

وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا

"और मेरा सिर भड़क उठा है बुढ़ापे से"

यानि बुढ़ापे के सबब मेरे सिर के बाल मुकम्मल तौर पर सफ़ेद हो गए हैं।

وَلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾

"और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझे पुकार कर कभी भी नामुराद नहीं रहा।"

चुनाँचे आज मैं बड़ी हिम्मत करके तुझसे एक बहुत ही ग़ैरमामूली दुआ करने जा रहा हूँ। दुनियवी हालात और तबई क़वानीन के ऐतबार से तो ऐसा होना मुमकिन नहीं, मगर तू चाहे तो नामुमकिन भी मुमकिन हो जाता है।

आयत 5

وَاِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ

"और मुझे अंदेशा है अपने भाई-बन्दों से अपने बाद"

मुझे अपने वुरसाअ में कोई ऐसा शख्स नज़र नहीं आता जो मेरे बाद हेकल-ए-सुलेमानी का मुतवल्ली और मेरा जानशीन बनने की सलाहियत रखता हो।

وَكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ﴿٥﴾

"और मेरी बीवी बाँझ है, तो तू मुझे ख़ास अपने पास से एक वली अता कर।"

यहाँ "वली" लफ्ज़ बहुत अहम है, यानि मुझे ऐसा साथी अता कर जो मेरे मिशन में मेरा दोस्त व बाज़ू बन सके।

आयत 6

یَّرِثُنِیْ وَیَرِثُ مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ ۫

"जो वारिस हो मेरा और आले याक़ूब का"

मुझे एक ऐसे साथी की ज़रूरत है जो मेरी दीनी व रूहानी विरासत को संभाल सके, और मेरी विरासत क्या! ये तो आले याक़ूब की विरासत है। इस मुक़द्दस मिशन को आगे बढाने के लिये मुझे एक ऐसा वारिस अता कर जो वाक़ई इस मंसब का अहल हो।

وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا ﴿٦﴾

"और ऐ मेरे परवरदिगार! उसको बनाइयो पसंदीदा।"

रज़ियुन फ़ईल के वज़न पर है, चुनाँचे इसमें राज़ी (वह जो राज़ी हो) और मरज़िय्युन (जिसको राज़ी कर दिया गया हो) दोनों कैफ़ियतों का मफ़हूम

पाया जाता है। जैसे सूरतुल बय्यिना में फ़रमाया गया: {رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ} (आयत 8) कि अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वह उससे राज़ी हो गए। इसी तरह सूरतुल फज्र (आयत 28) में नफ्से मुतमइन्ना के हवाले से फ़रमाया गया: {ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً} "तो लौट जा अपने परवरदिगार की तरफ़ इस हाल में कि तू उससे राज़ी और वह तुझसे राज़ी" इस दुआ के जवाब में हज़रत ज़करिया अलै. को बशारत दी गई:

आयत 7

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

"ऐ ज़करिया! हम तुम्हें बशारत देते हैं एक लड़के की जिसका नाम याहिया होगा, हमने इससे पहले इसका कोई हमनाम नहीं बनाया।"

इसका दूसरा मफ़हूम ये भी हो सकता है कि हमने इससे पहले इसका कोई नज़ीर नहीं बनाया, यानि उस जैसी सिफ़ात किसी में पैदा नहीं कीं।

आयत 8

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ

"उसने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे यहाँ बेटा कैसे हो जाएगा"

यह वही बात है जो हज़रत ज़करिया अलै. के हवाले से हम सूरह आले इमरान (आयत 40) में भी पढ़ चुके हैं।

وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝

"जबकि मेरी बीवी बाँझ है और मैं पहुँच चुका हूँ बुढ़ापे के बाइस सूख जाने की हालत को।"

यानि बुढ़ापे की वजह से मेरे जिस्म में हयात के सारे सोते खुश्क हो चुके हैं।

आयत 9

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ

"फ़रमाया: ऐसे ही होगा! तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि ये मुझ पर आसान है"

وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـــًٔا ۝

"और तुम्हें भी तो मैंने पैदा किया इससे पहले जबकि तुम कुछ भी नहीं थे।"

आयत 10

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ

"अर्ज़ किया: ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिये कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दे।"

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ــ١٠

"फ़रमाया: तुम्हारे लिये निशानी यह है कि तुम गुफ्तुगू नहीं कर सकोगे लोगों से तीन रातें मुतवातर।"

गोया बतौर निशानी अल्लाह तआला ने तीन दिनों तक हज़रत ज़करिया अलै. की क़ुव्वते गोयाई सल्ब कर ली। सूरह आले इमरान में इस मज़मून को इस तरह बयान किया गया है: {قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ} (आयत 41) यानि आप तीन दिन तक लोगों से गुफ्तुगू नहीं कर सकोगे मगर इशारों किनायों में।

आयत 11

فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ

"फिर वह हुजरे से निकल कर अपनी क़ौम की तरफ़ आया"

अपनी इबादत, राज़ो-नियाज़ और मुनाजात के बाद हज़रत ज़करिया अलै. अपने हुजरे से निकल कर अपनी क़ौम के लोगों की तरफ़ आए।

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِـيًّا ــ11

"और उन्हें इशारे से कहा कि तुम लोग तस्बीह बयान करो सुबह व शाम।"

आपने लोगों को इशारों किनायों से समझाया कि इस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से एक बहुत अहम फ़ैसला होने जा रहा है, लिहाज़ा तुम लोग सुबह व शाम कसरत से अल्लाह की तस्बीह व तहमीद करते रहो। अरबी में "वही" के लुग्वी मायने हैं: "अल आलाम बिस्सिर्री वल खिफ़ाअ" यानि किसी को इशारे से कोई बात इस तरह बताना कि दूसरों को पता ना चले। अम्बिया व रुसुल अलै. की तरफ़ जो वही आती है उसकी कैफ़ियत भी यही होती है। वही की मुख्तलिफ़ सूरतों का तज़किरा (बयानुल क़ुरान, जिल्द अव्वल के आग़ाज़ में) "तआरुफ़े क़ुरान" के ज़िमन में आ चुका है। आगे सूरतुश्शूरा में भी इसका ज़िक्र आएगा।

हज़रत याहिया अलै. की विलादत के बाद अब उनको बराहेरास्त मुखातिब किया जा रहा है:

आयत 12

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ

"ऐ याहिया किताब को मज़बूती से थाम लो!"

किताब से मुराद यहाँ ज़बूर, तौरात और दीगर सहाइफ़ हैं जो उस वक़्त बनी इसराइल के दरमियान मौजूद थे।

وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ12

"और हमने उसको अता कर दी हिकमत व दानाई बचपन ही में।"

अब हज़रत याहिया अलै. के ख़ुसूसी औसाफ़ बयान किये जा रहे हैं। यूँ समझिए कि हज़रत ईसा अलै. और हज़रत याहिया अलै. (John the Baptist and Jesus of Nazarat) दोनों ऐसी ग़ैरमामूली शख्सियात हैं कि इन जैसे औसाफ़ दूसरे अम्बिया व रुसुल अलै. में भी नहीं पाए गए। चुनाँचे हज़रत याहिया अलै. को बचपन ही में हिकमत अता कर दी गई।

आयत 13

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا 13

"और हमारी तरफ़ से सोज़ व गुदाज़ वाली मोहब्बत और पाकीज़गी (उसे अता हुई) और वह बहुत मुत्तक़ी था।"

आयत 14

وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا 14

"और वह अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने वाला था, और खुदसर व नाफ़रमान नहीं था।"

ये औसाफ़ अल्लाह तआला की ख़ुसूसी अता के तौर पर हज़रत याहिया अलै. की घुट्टी में डाल दिये गए।

आयत 15

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا 15

"और सलाम उस पर जिस दिन उसकी विलादत हुई, जिस दिन उसे मौत आए और जिस दिन वह उठाया जाए ज़िन्दा कर के।"

यहाँ पर हज़रत ज़करिया और हज़रत याहिया अलै. का क़िस्सा इख्तताम को पहुँचा और अब आगे हज़रत मरियम और हज़रत ईसा अलै. का क़िस्सा बयान किया जा रहा है।

आयात 16 से 40 तक

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا 16 فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا 17 قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا 18 قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ڰ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا 19 قَالَتْ
اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا 20 قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا
مَّقْضِيًّا 21 فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا 22 فَاَجَاۗءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا
مَّنْسِيًّا 23 فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا 24 وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا 25
فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا 26 فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ
قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـــًٔـا فَرِيًّا 27 يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا 28 فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ
نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا 29 قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ڜ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا 30 وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا 31 وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا 32 وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ
حَيًّا 33 ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ 34 مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ 35 وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ 36 فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ 37 اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ 38 وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ
الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ 39 اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ 40

आयत 16

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا 16

"और (अब) ज़िक्र कीजिये इस किताब (क़ुरान) में मरियम का, जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर एक शरक़ी गोशे में जा बैठी।"

हज़रत मरियम (सलामुन अलैय्हा) ने अपने लोगों से अलग-थलग होकर हेकले सुलेमानी के मशरिक़ी गोशे में खुद को मुक़य्यद कर लिया। ये गोया अल्लाह तआला के लिये ऐतकाफ़ की कैफ़ियत थी।

आयत 17

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ

"तो उसने अपने आपको उनसे परदे में कर लिया।"

उन्होंने गोशे में परदा तान कर खल्वत का माहौल बना लिया ताकि यक्सुई से अल्लाह की इबादत कर सकें।

فَاَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهَا رُوۡحَنَا

"पस हमने भेजा उसकी तरफ़ अपना एक फ़रिश्ता"

यहाँ पर रूह ब-मायने फ़रिश्ता है। क़ब्ल अज़ तफ़सीलन बयान हो चुका है कि फ़रिश्ता भी रूह है, वही भी रूह है, कुरान भी रूह है और रूहे इंसानी भी रूह है।

فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ــ17

"तो उसने सूरत इख़्तियार की उस (मरियम) के सामने एक मुकम्मल इंसान की।"

यानि फ़रिश्ता उनके सामने एक मुकम्मल इंसान की सूरत में नमुदार हुआ।

आयत 18

قَالَتۡ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِالرَّحۡمٰنِ مِنۡكَ اِنۡ كُنۡتَ تَقِيًّا ــ18

"मरियम ने कहा: मैं रहमान की पनाह माँगती हूँ तुमसे अगर तुम कोई मुत्तक़ी शख़्स हो।"

अचानक एक मर्द को अपनी खल्वतगाह में देख कर हज़रत मरियम (सला.अ) घबरा गईं कि वह किसी बुरी नीयत से ना आया हो। चुनाँचे उन्होंने उसे मुखातिब करके कहा कि मैं तुमसे अल्लाह की पनाह चाहती हूँ, और अगर तुम अल्लाह से डरने वाले हो, तुम्हारे दिल में अल्लाह का कुछ भी खौफ़ है तो किसी बुरे इरादे से बाज़ रहना।

आयत 19

قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوۡلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ــ19

"उसने कहा: मैं तो आपके रब का फरिस्तादा हूँ ताकि मैं आपको एक पाकीज़ा बेटा अता करूँ।"

आयत 20

قَالَتۡ اَنّٰى يَكُوۡنُ لِىۡ غُلٰمٌ وَّلَمۡ يَمۡسَسۡنِىۡ بَشَرٌ وَّلَمۡ اَكُ بَغِيًّا ــ20

"मरियम ने कहा: मेरे यहाँ बेटा कैसे होगा? जबकि मुझे किसी बशर ने छुआ तक नहीं और ना ही मैं कोई बदचलन औरत हूँ।"

आयत 21

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ

"उस (फ़रिश्ते) ने कहा: ऐसे ही होगा!

यानि किसी मर्द के ताल्लुक़ के बगैर ही अल्लाह तआला आपको बेटा अता फ़रमाएगा।

قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجۡعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحۡمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمۡرًا مَّقۡضِيًّا ــ21

"आपका रब फ़रमाता है कि यह मुझ पर आसान है, ताकि हम इसे बनायें एक निशानी लोगों के लिये और रहमत अपनी तरफ़ से, और यह एक तयशुदा अम्र है।"

यानि इस बच्चे को हम लोगों के लिये मौज्ज़ा और अपनी रहमत का ज़रिया बनाने का फ़ैसला कर चुके हैं। चुनाँचे हज़रत ईसा अलै. की पैदाइश भी मौज्ज़ा थी, आपका रफ़अ समावी भी मौज्ज़ा था और इसके अलावा भी

आपको बहुत से मौज्ज़ात अता हुए थे। गर्ज़ आपकी शख्सियत हर लिहाज़ से ग़ैरमामूली, मुमय्यज़ और मुमताज़ थी।

आयत 22

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ــ22

"तो उसे उस (बच्चे) का हमल ठहर गया, चुनाँचे वह उसे लेकर एक दूर जगह पर चली गई।"

इस परेशानी में कि हमल बढ़ेगा तो लोग क्या कहेंगे, हज़रत मरियम तन्हाई की गर्ज़ से बैतुल हम्म चली गईं, जो हेकले सुलेमानी से आठ मील के फ़ासले पर था।

आयत 23

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ

"फिर ले आया उसे दर्दे ज़ेह एक खजूर के तने के पास।"

विलादत के वक़्त जब दर्दे ज़ेह की शिद्दत बढ़ी तो हज़रत मरियम ने सहारे के लिये एक खजूर के तने को मज़बूती से पकड़ लिया। यह दर्द की शिद्दत को बर्दाश्त करने का एक तरीक़ा है। अगर औरत वज़अ हमल के वक़्त किसी चीज़ को मज़बूती से थाम ले तो उसमें दर्द को बर्दाश्त करने की हिम्मत पैदा हो जाती है।

قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ــ23

"(इस कैफ़ियत में) उसने कहा: काश मैं इससे पहले मर चुकी होती और एक भूली-बिसरी चीज़ हो चुकी होती।"

अल्लाह की वह बंदी मुम्किना अंदेशों से काँप रही थी कि अब मैं इस बच्चे का क्या करूँगी? लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगी? दुनिया क्या कहेगी? काश यह वक़्त आने से पहले ही मुझे मौत आ गई होती और मेरी याद तक लोगों के ज़हनों से महव हो (मिट) चुकी होती।

आयत 24

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ

"तो उसने पुकारा उसे उसके नीचे से"

यहाँ आम मुफ़स्सरीन का ख्याल यह है कि जिस फ़रिश्ते ने पहले बशारत दी थी उसी ने अब भी उन्हें आवाज़ दी। مِنْ تَحْتِهَآ का मफ़हूम यही लिया गया है कि उस वक़्त हज़रत मरियम निस्बतन बुलन्द जगह पर होंगी और वह फ़रिश्ता ज़रा नशेब में होगा। वैसे भी वज़अ हमल के मौक़े पर फ़रिश्ते का आपके बिल्कुल क़रीब रहना मुनासिब नहीं था। लेकिन مِنْ تَحْتِهَآ की एक क़राअत مَنْ تَحْتَهَآ भी है, यानि उसे पुकारा उसने जो उसके नीचे था। इस तर्जुमे के मुताबिक़ मफ़हूम यह होगा कि विलादत के फ़ौरन बाद बच्चा बोल पड़ा और मैं यहाँ इसी मफ़हूम को तरजीह देता हूँ। इसलिये कि अगर उस वक़्त बच्चे ने कलाम ना किया होता तो हज़रत मरियम को कैसे यक़ीन आता कि ये बच्चा लोगों के सवालात का खुद ही जवाब देगा और वह बच्चे को लेकर लोगों के सामने आने पर क्योंकर तैयार हो जातीं। बहरहाल वह जो नीचे था उसने आपको पुकार कर कहा:

"कि आप ग़मगीन ना हों" أَلَّا تَحْزَنِيْ

अगर यह हज़रत मसीह अलै. यानि नौमौलूद (नवजात बच्चे) ही का कलाम है तो गोया आप अपनी वालिदा को तसल्ली दे रहे हैं कि अम्मीजान! आप बिल्कुल परेशान ना हों।

"(देखिये) आपके रब ने आपके (क़दमों के नीचे) एक चश्मा रवाँ कर दिया है।" قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ــ24

आयत 25

"और आप इस खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिलाइये, आप पर ताज़ा पकी हुई खजूरें झड पड़ेंगी।" وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ــ25

आयत 26

"पस आप खाईये और पीजिये और (अपनी) आँखें ठंडी कीजिये!" فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ

हज़रत मरियम सलामुन अलैय्हा ने ये तमाम मौज्ज़ात अपनी आँखों से देखे। बच्चा भी बोल पड़ा, चश्मा भी जारी हो गया और खजूर के सूखे तने को हिलाने से ताज़ा पकी हुई खजूरें भी उनके सामने आ गिरीं। ये सब कुछ देखने के बाद उनमें हालात का मुक़ाबला करने की जुर्रात पैदा हुई और उन्होंने बच्चे को लेकर आबादी में आने का फ़ैसला किया।

"और अगर आप देखें किसी आदमी को (और वह आपसे पूछे) तो उससे (इशारे से) कह दें कि मैंने नज़र मानी है रहमान के लिये रोज़े की, लिहाज़ा मैं बात नहीं करूँगी आज किसी इंसान से।" فَاِمَّا تَرِيْنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ــ26

उनकी शरीअत में रोज़े की हालत में खाने-पीने की पाबंदी के अलावा बात-चीत करने पर भी पाबंदी थी।

आयत 27

"फिर वह ले आई उसको उठाए हुए अपनी क़ौम के पास।" فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ

हज़रत मरियम बड़े हौसले का मुज़ाहिरा करते हुए अपने नौमौलूद बच्चे को उठाए हुए अपनी क़ौम की तरफ़ आ गईं। बच्चे की गुफ्तुगू वाला मौज्ज़ा देख लेने के बाद आपको तसल्ली थी कि वह खुद ही लोगों के सवालात के जवाब दे देगा। आयत 24 के हवाले से बच्चे के कलाम करने का तज़किरा आमतौर पर तफ़ासीर में नहीं मिलता और "मिन तहितहा" से यही समझा गया है कि इस मौक़े पर फ़रिश्ते ही ने आपको पुकारा था। बहरहाल मेरी राय यह है कि हज़रत मरियम को उस वक़्त नीचे से पुकारने वाला आपका नौमौलूद बेटा था, जिसकी गुफ्तुगू से आपको हौसला मिला और आप बच्चे के साथ लोगों का सामना करने पर आमादा हुईं। वल्लाह आलम!

"लोगों ने कहा: ऐ मरियम! यक़ीनन तुम एक तूफ़ान गढ़ लाई हो।"

قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـــًٔا فَرِيًّا ــــ27

उनको देखते ही लोगों ने तरह-तरह की बातें करना शुरू कर दीं कि तुमने यह क्या गज़ब किया! तुम्हारी गोद में यह किसका बच्चा है? ये तुमने बहुत बुरी हरकत की है, वगैरह।

आयत 28

"ऐ हारून की बहन! ना तो तुम्हारा वालिद बुरा आदमी था और ना ही तुम्हारी वालिदा बदकार थी।"

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ــــ28ۚ

हज़रत मरियम को हारून की बहन कहने की वजह या तो यह हो सकती है कि उनका हारून नामी कोई भाई हो, या यह भी मुमकिन है कि हज़रत हारून अलै. की नस्ल से होने की वजह से एक बरगज़ीदा जद्दे-अमजद के तौर पर आपका नाम लिया गया हो कि देखो किस अज़ीम शख्सियत की नस्ल से तुम्हारा ताल्लुक़ है और हरकत तुमने किस क़दर गिरी हुई की है।

आयत 29

"तो उसने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा कर दिया। लोगों ने कहा हम इससे कैसे बात करें जो गोद में पड़ा बच्चा है!"

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ــــ29

आयत 30

"उस (बच्चे) ने कहा: मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उसने मुझे किताब अता की है और मुझे नबी बनाया है।"

قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ۡ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۙ ــــ30

आयत 31

"और मुझे बा-बरकत बनाया है जहाँ कहीं भी मैं होऊँगा, और मुझे उसने ताकीद की है नमाज़ की और ज़कात की जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ।"

وَجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ــــ31ۤ

आयत 32

"और (उसने मुझे बनाया) भलाई करने वाला अपनी वालिदा के साथ, और उसने मुझे तुंदखु, बदबख्त नहीं बनाया।"

وَبَرًّا ۢ بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ــــ32

आयत 33

"और सलाम है मुझ पर जिस दिन मैं जना गया और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन मुझे उठाया जाएगा ज़िन्दा करके।"

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ــــ33

आयत 34

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَـقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ــــ34

"ये हैं ईसा इब्ने मरियम! ये है हक़ की बात, जिसके बारे में ये लोग शक करते हैं।"

आयत 35

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ــ35

"अल्लाह के शायाने शान नहीं कि वह किसी को बेटा बनाए, वह (इससे) पाक है। जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे कहता है हो जा, तो वह हो जाता है।"

यानि हज़रत मसीह अलै. की विलादत के सिलसिले में बाप का हिस्सा अल्लाह तआला के एक हर्फ़े "कुन" के ज़रिये से पूरा हुआ, जबकि बाक़ी सारा अमल आम फ़ितरी और तबई तरीक़े से तकमील पज़ीर हुआ। इसी लिये आपको "कलिमतुन मिन्हु" (आले इमरान 45) यानि अल्लाह का ख़ास कलमा क़रार दिया गया है।

आयत 36

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ــــ36

"और यक़ीनन अल्लाह ही है मेरा रब भी और तुम्हारा रब भी, तो तुम उसी की बंदगी करो। यही सीधा रास्ता है।"

आयत 37

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ــ37

"फ़िर इख्तलाफ़ात पैदा कर लिये (मुख्तलिफ़) गिरोहों ने आपस में। तो बरबादी है उन काफ़िरों के लिये उस बड़े दिन की पेशी से।"

क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला के हुज़ूर पेशी होगी और तमाम हक़ाइक़ खुल कर सामने आएँगे तो हज़रत मसीह अलै. के बारे में भी हक़ीक़त वाज़ेह हो जाएगी। चुनाँचे इस बारे में जिन लोगों ने मनघडत अक़ीदे बनाए और फ़िर उन गलत अक़ाइद पर ही जमे रहे हत्ता कि इसी हालत में उन्हें मौत आ गई, ऐसे लोगों के लिये उस दिन हलाकत व बर्बादी के सिवा कुछ नहीं होगा।

आयत 38

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ــ38

"क्या ही अच्छा वह सुन रहे होंगे और क्या ही अच्छा वह देख रहे होंगे जिस दिन वह हमारे पास आएँगे, लेकिन आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में मुबतला हैं।"

आयत 39

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ــــ39

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप इन्हें ख़बरदार कर दीजिये उस यौमे हसरत से, जब हर मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा।

अलबत्ता (अब) ये लोग गफ़लत में मुबतला हैं, लिहाज़ा ये ईमान नहीं लाएँगे।"

आयत 40

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا

"यक़ीनन हम ही वारिस होंगे ज़मीन के और जो कोई इस पर मौजूद है (उसके भी)"

उस दिन रुए ज़मीन की हुक्मरानी और दुनियवी मालो-मताअ की मिल्कियत के आरज़ी दावेदार सबके सब ख़त्म हो जाएँगे और इस सब-कुछ की विरासत ज़ाहिरी तौर पर भी हमें मुन्तक़िल हो जाएगी।

وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ــ40

"और ये सब लोग हमारी ही तरफ़ लौटाए जायेंगे।"

आयात 41 से 50 तक

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ــ41 اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـــًٔا ــ42 يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ــ43 يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ــ44 يٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ــ45 قَالَ اَ رَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ــ46 قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ــ47 وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۡ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاۗءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ــ48 فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ــ49 وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۧــ50

आयत 41

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ــ41

"और तज़किरा कीजिये इस किताब में इब्राहीम अलै. का। यक़ीनन वह सिद्दीक़ नबी थे।"

صِدِّيْقًا نَّبِيًّا एक नई तरकीब है, जो क़ुरान हकीम में यहाँ पहली मर्तबा आई है। यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. को और आयत 56 में हज़रत इदरीस अलै. को صِدِّيْقًا نَّبِيًّا फ़रमाया गया है, जबकि आयत 51 और 54 में बिलतरतीब हज़रत मूसा अलै. और हज़रत इस्माइल अलै. को रसूलन नबिय्यन के लक़ब से नवाज़ा गया है। गोया ये दो अलग-अलग तराकीब हैं और ज़ाहिर है कि हर एक का अपना अलग मफ़हूम है। अगरचे मेरे इल्म की हद तक इन अल्फ़ाज़ या तराकीब की तरफ़ किसी ने तवज्जो नहीं की, बल्कि मुझे उस वक़्त सख्त हैरत हुई जब मैंने एक मारूफ़ आलिमे दीन और मुफ़स्सिरे क़ुरान से इसका तज़किरा किया तो उन्होंने हैरत से पूछा कि क्या वाक़ई ऐसा है? यानि क्या वाक़ई क़ुरान में दो अम्बिया के बारे में सिद्दीक़न नबिय्यन और दो के बारे में रसूलन नबिय्यन के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं? वह खुद क़ुरान की मुकम्मल तफ़सीर लिख चुके थे मगर इस तरफ़ उनका ध्यान ही नहीं गया था। बहरहाल मैं चाहता हूँ कि ये नुक्ता जिस हद तक अल्लाह तआला ने मुझ पर मुन्कशिफ़ फ़रमाया है उस हद तक मैं दूसरों तक पहुँचा दूँ।

इन दो तराकीब को समझने के लिये सबसे पहले तो सूरतुल फ़ातिहा की ये आयात (6 व 7) मद्देनज़र रखें जिनमें हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं: {اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ} {صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ} "ऐ अल्लाह! हमें सीधा रास्ता दिखा, उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने ईनाम किया है।" और फ़िर सूरतुन्निसा की उस आयत पर गौर करें जिसमें उन लोगों के बारे में

वज़ाहत की गई है जिन पर अल्लाह तआला का ईनाम हुआ है: {وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا} (आयत 69) इस आयत में उन लोगों के चार दर्जात बयान हुए हैं जो मुन'अम अलैहिम के ज़ुमरे में आते हैं। इनमें सबसे ऊँचा अंबिया का दर्जा है, फिर सिद्दीक़ीन का, फिर शुहदाअ का, और नीचे base line पर सालेहीन हैं, यानि नेक दिल, मुख्लिस मुसलमान जो सादिक़ुल क़ौल और सादिक़ुल ईमान हैं। अगर नीचे से ऊपर की तरफ़ इरतक़ाअ के हवाले से देखा जाए तो base line पर पहला दर्जा मोमिनीन सालेहीन का है। अगर कोई इस दर्जे से तरक्क़ी करेगा तो उसके लिये दर्जा शहादत है और फिर इससे ऊपर दर्जा सिद्दीक़ियत। इस लिहाज़ से दर्जा-ए-सिद्दीक़ियत गोया किसी भी इंसान के लिये रूहानी तरक्क़ी के मदारज में बुलंद तरीन दर्जा है, क्योंकि इसके ऊपर नुबुवत का दर्जा है, जो इकतसाबी नहीं, सरासर वहबी है, और अब वह दरवाज़ा नौए इंसानी के लिये मुस्तक़िल तौर पर बंद हो चुका है।

सिद्दीक़ीन और शुहदाअ के फ़र्क़ को साइकोलॉजी की दो जदीद इस्तलाहात के ज़रिये इस तरह समझना चाहिये कि अल्लाह तआला ने हर इंसान को मुख्तलिफ़ मिज़ाज पर पैदा फ़रमाया है। मिज़ाज और रवैय्ये के ऐतबार से जदीद साइकोलॉजी इंसानों को बुनियादी तौर पर दो गिरोहों में तक़सीम करती है। जो लोग मजलिस पसंद हों, तन्हाई से घबराते हों, हर वक़्त सैर-सपाटे करने, लोगों से मिलने-जुलने और खुश गप्पियों में खुश रहते हों, उन्हें बेरूं बीन (extroverts) कहा जाता है। इनके बरअक्स तन्हाई पसंद, गौर व फ़िक्र करने वाले, अपने ख्यालों में मग्न रहने और महफ़िलों से हत्तल मक़दूर इजतनाब करने वाले लोग दरूबीन (introverts) कहलाते हैं। इनके अलावा एक तीसरी कैफ़ियत इन दो रवैय्यों के ख़ूबसूरत तवाज़ुन से पैदा होती है। चुनाँचे ऐसे लोग जिनकी शख्सियात में मज़कूरा दोनों रवैय्ये तवाज़ुन के साथ मौजूद हों वह ambiverts कहलाते हैं, लेकिन ऐसा शाज़ व नादार ही होता है कि एक शख्स में दोनों रवैय्ये तवाज़ुन के साथ मौजूद हों। इसलिये ambiverts क़िस्म के लोग अमलन बहुत ही कम होते हैं और अमूमी तौर पर दुनिया में मिज़ाज के ऐतबार से मंदरजा बाला दो अक़साम के लोग ही पाए जाते हैं। दरूबीन (introverts) क़िस्म के लोग गौर व फ़िक्र की आदत के बाइस फ़ितरत के हक़ाइक को बेहतर तौर पर समझ सकते हैं। कायनात के बारे में सोच-विचार के नतीजे में अल्लाह तआला की आफ़ाक़ी आयात उनसे हम कलाम होती हैं और इस सिलसिले में अहम हक़ाइक उन पर मुन्कशिफ़ होते हैं। ऐसे लोग अपनी फितरते सलीमा और अक़्ले सलीम की रहनुमाई में अल्लाह को भी पहचान लेते हैं, आख़िरत की ज़रूरत और हक़ीक़त को भी समझ लेते हैं और ये भी जान जाते हैं कि बंदगी सिर्फ़ अल्लाह ही की करनी चाहिये। लेकीन बंदगी का तरीक़ा क्या हो? इसका उन्हें इल्म नहीं होता। इसके लिये वह अल्लाह से रहनुमाई की इल्तजा करते हैं:{اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ} (फ़ातिहा:5) ये लोग दरअसल सिद्दिक़ीन होते हैं और इनकी शान यह है कि ज्योंहि कोई इल्हामी दावत इन तक पहुँचती है वह उसे इस अंदाज़ में लपक कर क़ुबूल करते हैं गोया मुद्दत से उसी के मुन्तज़िर बैठे थे। हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. के क़ुबूले इस्लाम का वाक़िया इस हक़ीक़त पर शाहिद है। रसूल अल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि मैंने जिसके सामने भी ईमान की दावत पेश की उसने कुछ ना कुछ तो क़फ़ ज़रूर किया, सिवाय अबुबक्र रज़ि. के। यानि आपने एक लम्हे के लिये भी तवक्कुफ़ नहीं किया और दावत पर ऐसे लब्बैक कहा जैसे वह इसके इंतेज़ार में बैठे थे।

अलबत्ता बेरूं बीन (extroverts) क़िस्म के लोग चूँकि खुद को खेल-कूद, सैर व शिकार, मेल-मुलाक़ात वगैरह में मसरूफ़ रखते हैं, इसलिये उनका तबई मीलान गौर व फ़िक्र की तरफ़ नहीं होता। ऐसे लोग किसी

इल्हामी दावत को समझने में हमेशा देर कर देते हैं, और जब वह किसी ऐसे मामले की तरफ़ मुतवज्जा भी होते हैं तो अक्सर जज़्बाती अंदाज़ में होते हैं। लेकिन जब वह किसी नज़रिये या दावत को क़ुबूल कर लेते हैं तो आमतौर पर ज़्यादा मुतहर्रिक और फ़आल साबित होते हैं और यूँ मुसाबक़त में बज़ाहिर introverts से आगे निकल जाते हैं। चुनाँचे हुज़ूर ﷺ की दावत को हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने जहाँ एक लम्हे के तौक़फ़ के बगैर क़ुबूल कर लिया वहाँ हज़रत उमर और हज़रत हमज़ा रज़ि. को इस तरफ़ मुतवज्जा होने में छ: साल लग गए। हज़रत उमर रज़ि. तो बनु अदी में से थे और आपकी हुज़ूर ﷺ के साथ बज़ाहिर ज़्यादा क़ुरबत नहीं थी, मगर हज़रत हमज़ा रज़ि. तो आपके सगे चाचा और दूध शरीक थे। वह बचपन में आपके साथ खेले थे और आपसे बहुत मोहब्बत भी करते थे, लेकिन इस सब-कुछ के बावजूद छ: साल तक आपने हुज़ूर ﷺ की दावत की तरफ़ कभी संजीदगी से गौर ही नहीं किया और जब ईमान लाए तो हादसाती और जज़्बाती अंदाज़ में लाए।

एक रोज़ शिकार से वापस आए तो अभी घर में दाख़िल भी नहीं हुए थे कि लौंडी ने हुज़ूर ﷺ से अबु जहल की गुस्ताखी के बारे में ख़बर दी। बस ये सुनते ही आग-बगुला हो गए। घर जाने के बजाय सीधे अबु जहल के पास पहुँचे। जाते ही उसके सिर पर कमान दे मारी और उसे ललकारा कि आज से मैं भी ईमान ले आया हूँ, तुम मेरा मुक़ाबला कर सकते हो तो आओ मैदान में! ऐसे ही हज़रत उमर रज़ि. भी जज़्बाती अंदाज़ में ईमान लाए। घर से मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को (मआज़ अल्लाह!) क़त्ल करने के इरादे से निकले। जज़्बात की रू में ही बहन और बहनोई से जा उलझे। बहन की ग़ैर-मामूली इस्तक़ामत देखी तो सोचने पर मजबूर हुए और जब संजीदगी से गौर किया तो एक दम दिल की दुनिया ही बदल गई। फिर क्या था? वही शमशीर बरहना जो क़त्ल के इरादे से लेकर निकले थे, गर्दन में लटकाए गुलामों की तरह दरे नुबुवत पर हाज़िर हुए और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। बहरहाल इस तफ़सील का ख़ुलासा यह है कि दरूं बीन (introverts) क़िस्म के लोग सिद्दीक़ीन और बेरूं बीन (extroverts) मिज़ाज के अफ़राद शुहदाअ होते हैं।

इंसानी मिज़ाज का ये फ़र्क़ अम्बिया की शख्सियात में भी पाया जाता है। कुछ अम्बिया का मिज़ाज सिद्दीक़ीन से मुनासबत रखता है और कुछ शुहदाअ से। हज़रत इस्माइल अलै. के बारे में रिवायत है कि आप शिकार के बहुत शौक़ीन थे और इसी शौक़ में कई-कई दिन घर से बाहर रहते थे। हज़रत इब्राहीम अलै. दो मर्तबा आपसे मिलने के लिये गए, मगर आपके घर से बाहर होने की वजह से दोनों मर्तबा बाप-बेटे की मुलाक़ात ना हो सकी। इसी तरह हज़रत मूसा अलै. का मिज़ाज भी जलाली था। आपने मिस्र में एक आदमी को मुक्का रसीद किया तो उसकी जान ही निकल गई। इंसानी मिज़ाज की इस तशरीह के ऐतबार से मेरा ख्याल है कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इदरीस अलै. की शख्सियात सिद्दीक़ियत के साथ मुनासबत रखती थीं, इसलिये वह सिद्दीक़ नबी क़रार पाए, जबकि हज़रत इस्माइल और हज़रत मूसा अलै. की शख्सियात शुहदाअ जैसी थीं, चुनाँचे वह रसूल नबी कहलाए। इस सिलसिले में यह नुक्ता भी मद्देनज़र रहना चाहिये कि रिसालत और शहादत के अल्फ़ाज़ की आपस में ख़ुसूसी मुनासबत है। हर रसूल को अपनी क़ौम की तरफ़ शाहिद बना कर भेजा गया। कारे रिसालत यानि दावत व तब्लीग और इत्मामे हुज्जत में अमल का पहलु ग़ालिब है। हुज़ूर ﷺ के बारे में भी सूरतुल अहज़ाब (आयत 45) में फ़रमाया गया: {يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا} "ऐ नबी! बिला शुबह हमने आपको भेजा है गवाही देने वाला और खुशख़बरी सुनाने वाला और ख़बरदार करने वाला।" इसी तरह सूरतुन्निसा (आयत 41) में भी हम पढ़ चुके हैं: {فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰي هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا} "फिर क्या हाल होगा जब

हम लाएँगे हर उम्मत में से एक गवाह और (ऐ नबी ﷺ!) आपको हम लाएँगे इन पर गवाह।" इस सारी वज़ाहत का लुब्बे-लुबाब यह है कि मज़कूरा आयात में शुहदाअ का मिज़ाज रखने वाले अंबिया को रसूलन नबिय्यन और सिद्दीक़ियत के मिज़ाज के हामिल अंबिया को सिद्दीक़न नबिय्यन के लक़ब से याद फ़रमाया गया है। सूरतुल हदीद के मुताअले के दौरान उसकी आयत 19 {أُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۚ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ} के हवाले से इस मौज़ू पर इंशा अल्लाह मज़ीद गुफ्तुगू होगी।

आयत 42

إِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـــًٔا ــ42

"याद कीजिये जब इब्राहीम ने अपने वालिद से कहा: अब्बाजान! आप क्यों बंदगी करते हैं ऐसी चीज़ों की जो ना सुन सकती हैं और ना देख सकती हैं और ना ही आपके कुछ काम आ सकती हैं।"

इन आयात के हवाले से यह नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि हज़रत इब्राहीम अलै. का अपने वालिद को मुखातिब करने का अंदाज़ इन्तहाई मौ-अदबाना है: या अ'बति, या अ'बति (ऐ मेरे अब्बाजान! ऐ मेरे अब्बाजान!)। एक दाई और मुबल्लिग़ के लिये यह गोया एक मिसाल है कि अगर उसे दावत व तब्लीग के सिलसिले में अपने से किसी बड़े या किसी बुज़ुर्ग को मुखातिब करना हो तो उसका तर्ज़े तखातब कैसे होना चाहिये। इस लिहाज़ से यह कुरान मजीद का बेहतरीन मक़ाम है।

आयत 43

يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ قَدْ جَاۗءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ

"अब्बाजान! यक़ीनन मेरे पास वह इल्म आया है जो आपके पास नहीं आया"

मुझे अल्लाह तआला ने ब-ज़रिया-ए-वही हक़ाइक़ से आगाह किया है। मेरे पास वह हिदायत आई है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने बनी नौए इंसान से इन अल्फ़ाज़ में वादा फ़रमाया था: {فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى} (सूरतुल बक़रह 38)

فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ــ43

"पस आप मेरी पैरवी कीजिये, मैं आपको दिखाऊँगा सीधा रास्ता।"

आप मेरा कहना मानिये, मेरे पीछे चलिये, मैं यक़ीनन सीधे रास्ते की तरफ़ आपकी रहनुमाई करूँगा।

आयत 44

يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ــ44

"अब्बाजान! आप शैतान की बंदगी ना कीजिये, शैतान यक़ीनन रहमान का ना-फरमान था।"

उस शैतान की फ़रमाबरदारी मत कीजिये जो अल्लाह तआला के सामने बग़ावत और सरकशी का इरतकाब कर चुका है।

आयत 45

يٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ؁45

"अब्बाजान! मुझे अंदेशा है कि रहमान की तरफ़ से कोई अज़ाब आपको आ पकड़े और फिर आप शैतान ही के साथी बन कर रह जायें।"

आयत 46

قَالَ اَ رَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ

"उसने कहा: ऐ इब्राहीम! क्या तुम किनारा कशी कर रहे हो मेरे मअबूदों से?"

एक तरफ़ हज़रत इब्राहीम अलै. का लजाजत भरा तर्ज़े तखातब था तो दूसरी तरफ़ जवाब में बाप का यह फ़िरऔनी अंदाज़ भी मुलाहिज़ा हो!

لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ؀46

"अगर तुम इससे बाज़ ना आए तो मैं तुम्हें संगसार कर दूँगा, और तुम मुझे छोड़ (कर चले) जाओ एक मुद्दत तक।"

तुम्हारी ये बातें मेरी बर्दाश्त से बाहर हैं, लिहाज़ा तुम फ़ौरी तौर पर मेरी निगाहों से दूर हो जाओ!

आयत 47

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ؀47

"इब्राहीम अलै. ने कहा! आप पर सलाम! मैं अपने रब से आपके लिये इस्तगफ़ार करता रहूँगा, वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है।"

इब्राहीम अलै. ने बाप की तरफ़ से इतने सख्त जवाब के बाद भी अपना अंदाज़े तखातब इन्तहाई मौअदबाना रखा, इससे भी बढ़ कर आपने उनके लिये अपने मेहरबान रब से दुआ करने का भी इरादा किया। इसी तरह एक मुबल्लिग़ और दाई को भी चाहिये कि वह मद्दे मुक़ाबिल की तरफ़ से इन्तहाई सख्त जुमलों के बाद भी तर्श अंदाज़ इख्तियार करने के बजाय नरमी को ही अपनाए।

आयत 48

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۡ

"और मैं किनाराकशी करता हूँ आपसे भी और उन (तमाम मअबूदों) से भी जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पूजते हैं और मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा"

मैं तो अपने रब ही की बंदगी करूँगा, उसी से दुआ करूँगा।

عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاۗءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ؀48

"मुझे यक़ीन है कि मैं अपने रब को पुकार कर नामुराद नहीं रहूँगा।"

आयत 49

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ؀49

"फिर जब इब्राहीम ने उन सबसे किनाराकशी कर ली और उनसे भी जिनकी वह अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, तो हमने आपको अता किया इस्हाक़ (जैसा

बेटा) और याक़ूब (जैसा पोता), और हर एक को नबी बनाया।"

आयत 50

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا 50

"और हमने इन सबको अपनी ख़ुसूसी रहमत से हिस्सा अता फ़रमाया और इनको आला दर्जे की सच्ची शोहरत अता फ़रमाई।"

जैसे सूरतुल इंशराह में नबी अकरम ﷺ को {وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ} की सनद अता फ़रमाई गई इसी तरह यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. और आले इब्राहीम अलै. के ज़िक्रे खैर को बहुत आला सतह पर दुनिया में बाक़ी रखने का ज़िक्र है।

आयात 51 से 63 तक

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا 51 وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا 52 وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ
اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا 53 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا 54 وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠ وَكَانَ
عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا 55 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا 56 وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا 57 اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۤ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَاۗءِيْلَ ۡ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۭ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا
وَّبُكِيًّا 58۩ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا 59 اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَاُولٰۗىِٕكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَـيْــــًٔا 60 جَنّٰتِ عَدْنِۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا 61 لَا
يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ۭ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا 62 تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا 63

आयत 51

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا 51

"और किताब में तज़किरा कीजिये मूसा अलै. का, यक़ीनन वह थे ख़ास किये गए और वह थे रसूल नबी।"

हमने उन्हें ख़ास अपना बना लिया था। ये मज़मून सूरह ताहा (आयत 41) में भी आएगा।

आयत 52

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا 52

"और हमने उन्हें पुकारा तूर की दाईं जानिब से और उन्हें अपने क़रीब किया सरगोशी के लिये।"

आयत 53

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا 53

"और हमने उन्हें अता किया अपनी रहमत से उनके भाई हारून को नबी बना कर।"

हज़रत मूसा अलै. ने अपने भाई हारून अलै. के लिये दरख्वास्त की थी कि इन्हें भी मेरे साथ भेजा जाए। अल्लाह ने अपनी रहमत से आपकी ये दरख्वास्त क़ुबूल फ़रमाते हुए हज़रत हारून अलै. को भी मक़ामे नबुवत से सरफ़राज़ फ़रमाया। इसकी तफ़सील भी सूरह ताहा में आएगी।

आयत 54

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ

"और तज़किरा कीजिये इस किताब में इस्माइल अलै. का (भी), यक़ीनन वह वादे के सच्चे थे"

यह ख़ुसूसी तौर पर उस वादे की तरफ़ इशारा है जो आपने अपने वालिद माजिद हज़रत इब्राहीम अलै. से (अस्साफ्फात 102 में) इन अल्फ़ाज़ में किया था: {يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۡ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ} "अब्बाजान आप कर गुज़रिये जो आपको हुक्म हुआ है, मुझे आप इन्शा अल्लाह साबिरीन में से पायेंगे।" यूँ आपने ज़िबह होने के लिये अपनी गर्दन पेश कर दी और इस सिलसिले में सब्र करने का जो वादा किया था आख़िर वक़्त तक उसे निभाया।

وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ــ54

"और वह (भी) रसूल नबी थे।"

जैसा कि "रसूल नबी" का मफ़हूम बयान करते हुए क़ब्ल अज़े वज़ाहत की जा चुकी है कि हज़रत इस्माइल अलै. मिज़ाज के ऐतबार से बहुत मुतहर्रिक और फ़आल थे इसलिये आपको रसूलन नबिय्यन का लक़ब अता हुआ है। इस ज़िमन में इससे क़ब्ल हज़रत हमज़ा रज़ि. के मिज़ाज की भी मिसाल दी गई है। हज़रत हमज़ा रज़ि. हज़रत इस्माइल अलै. की नस्ल में से भी थे और आपकी शख्सियत हज़रत इस्माइल अलै. की शख्सियत से बहुत मुशाबेहत भी रखती थी।

आयत 55

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۚ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ــ55

"और वह हुक्म देते थे अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का, और वह अपने रब के नज़दीक पसंदीदा थे।"

आप अल्लाह तआला के बहुत मंज़ूरे नज़र थे।

आयत 56

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ

"और तज़किरा कीजिये किताब में इदरीस अलै. का (भी)"

हज़रत इदरीस अलै., हज़रत आदम अलै. के बाद और हज़रत नूह अलै. से क़ब्ल ज़माने में मबऊस हुए। इनसे पहले ज़ुर्रियते आदम में हज़रत शीश अलै. गुज़र चुके थे। तौरात में इनका नाम "हनूक" मज़कूर है। इनका ज़िक्र क़ुरान में नहीं है। हज़रत इदरीस और हज़रत शीश अलै. दोनों नबी थे, जबकि इनके बाद हज़रत नूह अलै. पहले रसूल के तौर पर मबऊस हुए।

اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ــ56ۙ

"यक़ीनन वह सिद्दीक़ नबी थे।"

इससे पहले आयत 41 में हज़रत इब्राहीम अलै. को भी "सिद्दीक़न नबिय्यन" के लक़ब से नवाज़ा गया है। यानि मिज़ाज के ऐतबार से हज़रत इदरीस अलै. की मुनास्बत हज़रत इब्राहीम अलै. के साथ थी। दोनों शख्सियात सिद्दीक़ियत के मिज़ाज की हामिल थीं।

आयत 57

وَرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿57﴾

"और हमने इन्हें उठाया बुलंद मक़ाम पर।"

इस्राइली रिवायात के ज़ेरे असर बाज़ लोगों ने इससे रफ़अ समावी मुराद लिया है कि हज़रत इदरीस अलै. को भी अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै. की तरह ज़िन्दा उठा लिया था। मेराज़ के मौक़े पर नबी अकरम ﷺ की चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस अलै. से मुलाक़ात हुई थी। लेकिन हज़रत ईसा अलै. के बारे में अल्फ़ाज़-ए-क़ुरानी बहुत वाज़ेह हैं: {رَافِعُكَ اِلَيَّ} (आले इमरान 55) कि मैं आपको अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ। इन अल्फ़ाज़ से रफ़अ समावी का मफ़हूम मुतअय्यन हो जाता है, जबकि हज़रत इदरीस अलै. के बारे में आयत ज़ेरे नज़र में लफ्ज़ "रफ़अ" के साथ "इला" की अदम मौजूदगी में यह मफ़हूम मुतअय्यन नहीं होता। चुनाँचे यहाँ पर इस लफ्ज़ का यही मफ़हूम मुराद लिया जा सकता है कि हमने उन्हें बुलंद मक़ाम अता किया।

आयत 58

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

"ये हैं वह लोग जिन पर ईनाम फ़रमाया अल्लाह ने अम्बिया में से"

सूरतुन्निसा की आयत 69 में मुनअम अलैयहिम लोगों के जिन चार तबक़ात का बयान है, उनमें से आला तरीन तबक़े के अफ़राद यानि अम्बिया किराम अलै. का यहाँ अल्लाह के ईनामात के हवाले से तज़किरा फ़रमाया जा रहा है।

مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۘ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۘ

"औलादे आदम में से, और उन लोगों (की नस्ल) में से जिन्हें सवार कराया हमने (कश्ती में) नूह अलै. के साथ"

وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۘ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ

"और इब्राहीम और याक़ूब की नस्ल में से, और उनमें से जिन्हें हमने हिदायत दी और जिन्हें हमने चुन लिया।"

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿58﴾

"जब तिलावत की जाती उन पर रहमान की आयात तो वह गिर पड़ते थे (अल्लाह की जनाब में) सज्दा करते हुए और रोते हुए।"

आयत 59

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

"फिर जानशीन हुए इनके बाद नाखल्फ़ लोग"

"खल्फ़" का लफ्ज़ जब "लाम" साकिन के साथ आता है तो इसके मायने "नाखल्फ़" के लिये जाते हैं। यानि अपने असलाफ़ के किरदार के ख़िलाफ़ अमल करने वाले और उनकी नेक नामी और बुज़ुर्गी को बट्टा लगाने वाले लोग।

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۙ﴿59﴾

"उन्होंने नमाज़ को ज़ाया कर दिया और ख्वाहिशात की पैरवी की, तो अनक़रीब वह मिलेंगे गुमराही से।"

यानि अनक़रीब वह गुमराही के अंजाम से दो-चार होंगे।

आयत 60

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـــًٔا ۙ﴿60﴾

"सिवाय उनके जिन्होंने तौबा की और वह ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये, तो वही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर क़तअन कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

उनके आमाल का उन्हें पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी ज़र्रा भर भी हक़ तल्फ़ी नहीं की जाएगी।

आयत 61

جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ

"(उन्हें मिलेंगे) ऐश-ए-दवाम के बाग़ात, जिनका वादा किया था रहमान ने अपने बन्दों से गैब में।"

अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ुरान में ऐसे वादे जगह-जगह किये गए हैं। दुनियवी ज़िंदगी में ना तो किसी ने जन्नत को देखा है और ना ही अल्लाह तआला को। ये सारा मामला गैब ही का है। चुनाँचे जो शख्स अल्लाह को और उसके ऐसे तमाम वादों को मानता है वह يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ के मसादिक़ गैब पर ईमान लाता है।

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿61﴾

"यक़ीनन उसका वादा तो पूरा होने वाला ही है।"

वह अपने वक़्त पर पूरा होकर रहेगा।

आयत 62

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ۭ

"वह नहीं सुनेंगे उसमें कोई लग्व बात मगर सिर्फ़ सलाम।"

जन्नत में हर तरफ़ से सलाम-सलाम की आवाज़ें आ रही होंगी। हर तरफ़ से फ़रिश्तों का दुरूद होगा और वह अहले जन्नत को सलाम कह रहे होंगे। सूरतुल वाक़िया (आयात 25, 26) में इस मज़मून को ऐसे बयान फ़रमाया गया है: {لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا} {اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا} "वह उसमें कोई लग्व और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे, मगर एक ही बात: सलाम! सलाम!"

وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿62﴾

"और उनके लिये उनका रिज़्क़ होगा उसमें सुबह और शाम।"

आयत 63

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ــــ63

"यह है वह जन्नत जिसका हम वारिस बनायेंगे अपने बन्दों में से उनको जो मुत्तक़ी होंगे।"

आयात 64 से 82 तक

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۚ ــ64 رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ــ65 وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَ اِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ــ66 اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـــًٔا ــــ67 فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۚ ــ68 ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ۚ ــ69 ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ــ70 وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ ــ71 ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ــ72 وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ــ73 وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ــ74 قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ــ75 وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ــ76 اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ــ77 اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۚ ــ78 كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۚ ــ79 وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ــ80 وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۚ ــ81 كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ــــ82

आयत 64

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ

"और (ऐ नबी ﷺ!) हम (फ़रिश्ते) नहीं नाज़िल होते मगर आपके रब के हुक्म से।"

यहाँ से एक बहुत अहम मज़मून का आग़ाज़ हो रहा है और यह बात इस सिलसिले की पहली कड़ी है। वाक़िया ये है कि रसूल अल्लाह ﷺ को क़ुरान के साथ जो वालहाना मोहब्बत थी, जो इश्क़ था, उसका जो शगफ़ और शौक़ था, उसकी बिना पर वही में वक़्फ़ा आप ﷺ पर बहुत शाक़ गुज़रता था। आपकी ख्वाहिश होती थी कि वही जल्द अज़ जल्द आती रहे ताकि उससे आप अपने वजूदे पुर नूर को मजीद मुनव्वर करते रहें। इस हवाले से आपने जिब्राइल अलै. से शिकवा किया कि आपकी आमद वक़्फ़े-वक़्फ़े से होती है, हम इंतेजार करते रहते हैं। आप ﷺ के इस शिकवे का यहाँ जिब्राइल की तरफ़ से जवाब दिया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ हम अपनी मर्ज़ी से नाज़िल नहीं होते, हम तो आपके रब के हुक्म के पाबंद हैं। उसका इज़्न होता है तो हम नाज़िल होते हैं।

لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ

"उसी के इख्तियार में है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो कुछ इसके दरमियान है।"

इन अल्फ़ाज़ में बहुत गहराई है। आगे और पीछे के दरमियान में कौन है? वही जो यहाँ मुतकल्लिम हैं, यानि खुद जिब्राइल! मुराद यह है कि मैं बिलकुल्लिया अल्लाह तआला के हुक्म के ताबेअ हूँ और फ़रिश्ते की यही शान है। फ़रिश्ते अल्लाह तआला के अहकाम से सरे मू सरताबी नहीं करते, जैसा कि सूरतुल तहरीम में फ़रमाया गया है: {لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ} (आयत 6) "वह अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते जिसका वह उन्हें हुक्म दे, और वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।"

وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۚ ــ64

"और आपका रब भूलने वाला नहीं है।"

ऐ नबी ﷺ हम आपके रब की इजाज़त और मशीयत से वही लेकर नाज़िल होते हैं। इसमें जो ताखीर होती है वह किसी निस्यान की वजह से नहीं होती बल्कि उसकी मर्ज़ी और हिकमत से होती है। सूरह फ़ुरक़ान में इस हिकमत की वज़ाहत इन अल्फ़ाज़ में बयान फरमाई गई है: {كَذٰلِكَ ۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا}

(आयत 32) इसी तरह (हमने इसे नाज़िल किया) ताकि मज़बूत कर दें इसके साथ आपका दिल और (इसी लिये) हमने इसे पढ़ कर सुनाया है थोड़ा-थोड़ा करके।" और सूरह बनी इसराइल (आयत 106) में ये मज़मून यूँ बयान हुआ है: {وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَي النَّاسِ عَلٰي مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا} "और क़ुरान को हमने टुकड़े-टुकड़े (करके नाज़िल) किया है, ताकि आप इसे लोगों को पढ़ कर सुनायें ठहर-ठहर कर, और हमने इसको उतारा है थोड़ा-थोड़ा करके।"

आयत 65

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ۭ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ــ65

"वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और उसका जो इन दोनों के माबैन है, पस आप उसी की इबादत करें और जमे रहें उसकी इबादत पर। क्या आप जानते हैं कोई उसका हमनाम?"

ज़ाहिर है जो अल्लाह की सिफ़ात हैं, जो उसकी शान है, ऐसी सिफ़ात और ऐसी शान रखने वाली कोई हस्ती कायनात में मौजूद नहीं।

आयत 66

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَ اِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ــ66

"और इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो फिर मुझे ज़िन्दा करके निकाल लिया जाएगा?"

यय उन लोगों का क़ौल नक़ल हुआ है जो बाअस बाद अल मौत के मुन्किर थे। मुशरिकीने मक्का के अक़ाइद के बारे में पहले भी कई बार बताया जा चुका है कि उनमें से अक्सर व बेशतर आख़िरत के क़ायल थे, इसी लिये तो बुतों के बारे में उनके इस अक़ीदे का क़ुरान में ज़िक्र हुआ है: {وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۗءِ شُفَعَاۗؤُنَا عِنْدَاللّٰهِ ۭ} (युनुस:18) "और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़राशी होंगे।"

आयत 67

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـــًٔا ــــ67

"क्या इंसान यह बात याद नहीं करता कि हमने ही उसे पैदा किया था इससे पहले जबकि वह कुछ भी नहीं था!"

आज जो इंसान हैरान होकर पूछता है कि भला मर जाने के बाद मैं फिर से कैसे ज़िन्दा करके उठा खड़ा किया जाऊँगा, क्या वह यह नहीं जानता कि अल्लाह ने उसे उस वक़्त एक इंसान की सूरत में पैदा किया था जब वह कुछ भी नहीं था। तो अब अल्लाह के लिये उसे दोबारा ज़िन्दा कर देना क्योंकर मुश्किल होगा?

आयत 68

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۚــ68

"तो आपके रब की क़सम! हम ज़रूर जमा करेंगे इन्हें और तमाम शैतानों को भी, फिर हम ज़रूर हाज़िर करेंगे इन्हें जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए।"

आयत 69

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَي الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ــ69

"फिर हम ज़रूर छाँट कर निकाल लेंगे हर गिरोह में से हर उस शख्स को जो उनमें सबसे ज़्यादा सख्त था रहमान के ख़िलाफ़ सरकशी में।"

उस इज्तमाअ में से हर-हर गिरोह के ऐसे सरकरदा लीडरों को चुन-चुन कर अलैहदा किया जाएगा जो अल्लाह तआला के मामले में ज़्यादा अकड़ने वाले थे और उसके मुक़ाबले में सरकशी और गुस्ताखी में पेश-पेश रहते थे। चुनाँचे अबु जहल और उक़बा बिन अबी मुईत जैसे बड़े-बड़े मुज़रिमों को छाँट कर अलग कर लिया जाएगा।

आयत 70

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ــ70

"फिर हम ख़ूब जानते हैं उन लोगों को जो उसमें पहले दाख़िल होने के लायक़ होंगे।"

आयत 71

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ــ71

"और तुम में से कोई भी ऐसा नहीं जो उस पर वारिद ना हो। यह आपके रब का हत्मी फ़ैसला है।"

इस आयत का जो मफ़हूम आमतौर पर समझा गया है मुझे उससे इत्तेफ़ाक़ है और वह यह है कि नौए इंसानी के तमाम अफ़राद को जहन्नम के ऊपर "पुल सिरात" पर से गुज़रना होगा। गोया यह वही "अल सिरात" होगा जिसे "सिराते मुस्तक़ीम" कहा गया है, जिस पर गामज़न होने के हम दावेदार हैं। यही सिराते मुस्तक़ीम क़यामत के दिन "पुल सिरात" बन जाएगा। अहले जन्नत उस रौशनी में चलते हुए जो उन्हें अता की जाएगी बड़ी सरअत और आसानी के साथ पुल सिरात को पार करके जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे, जबकि अहले जहन्नम अँधेरे में ठोकरें खा-खाकर नीचे आग में गिरते जाएँगे। यह मज़मून सूरतुल हदीद और सूरतुल तहरीम के मुताअले के दौरान ज़्यादा वज़ाहत के साथ बयान किया जाएगा। बहरहाल आयत ज़ेरे नज़र के मुताबिक़ हर इंसान को इस तरीक़े से जहन्नम पर से गुज़रना होगा। अहले जन्नत को इस पर से गुज़ारने का मक़सद यह है कि वह अपनी आँखों से जहन्नम का मुशाहेदा कर लें और उन्हें अंदाज़ा हो जाए कि अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से उनकी मगफ़िरत करके उन्हें किस हौलनाक अंजाम से बचाया है।

आयत 72

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ــ72

"फिर हम बचा ले जायेंगे उन्हें जिन्होंने तक़वे की रविश इख्तियार की थी और छोड़ देंगे ज़ालिमों को उसी में घुटनों के बल गिरे हुए।"

यानि अहले ईमान और अहले तक़वा पुल पर से गुज़रते जायेंगे और मुजरिम लोग नीचे जहन्नम में गिरते जायेंगे।

आयत 73

وَاِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ قَالَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا ۙ اَیُّ الۡفَرِیۡقَیۡنِ خَیۡرٌ مَّقَامًا وَّاَحۡسَنُ نَدِیًّا ــ73

"और जब इन्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं हमारी रौशन आयात, तो ये काफ़िर अहले ईमान से कहते हैं कि (देखो!) दोनों गिरोहों में से किसका मक़ाम बेहतर है और किसकी मजलिस अच्छी है!"

कुफ्फ़ारे मक्का मुसलमानों को मुखातिब करके तज़हीक व इस्तेहज़ा के अंदाज़ में सवाल करते थे कि ज़रा देखो तो सही मजलिसी शान व शौक़त और मआशरती मक़ाम व मरतबे के ऐतबार से हम दोनों गिरोहों में से कौनसा गिरोह बेहतर है। एक तरफ़ मोहम्मद (ﷺ) चंद फ़ुक़राअ व मसाकीन को लेकर बैठे हैं तो दूसरी तरफ़ अबु जहल और वलीद बिन मुगीरा की चौपालों में उमराअ व रुवसाअ (अमीरों व रईसों) की चहल-पहल है। इन दोनों गिरोहों की हैसियत व अहमियत का भला आपस में क्या तक़ाबुल और मवज़ना! कहाँ फ़र्श खाक़ पर बैठे बिलाल, खब्बाब, अबु फ़कीहा, अम्मार और यासिर रज़ि. जैसे मुफ़लिस व क़लाश और गुलाम, और कहाँ शाहाना महफिलों में सरदाराने क़ुरैश की सज-धज और शान व शौक़त! यह वही अंदाज़ है जो सूरतुल कहफ़ में दो अफ़राद के मकालमे के दौरान देखने में आता है। वहाँ भी एक दौलतमंद मुतकब्बिर शख्स ने अल्लाह के बन्दे को मुखातिब करके बड़े तमतराक़ से कहा था: {اَنَا اَکۡثَرُ مِنۡکَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا} "मैं तुमसे बहुत ज़्यादा हूँ माल में और बहुत बढ़ा हुआ हूँ नफ़री में!"

आयत 74

وَکَمۡ اَہۡلَکۡنَا قَبۡلَہُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ ہُمۡ اَحۡسَنُ اَثَاثًا وَّرِءۡیًا ــ74

"और हम कितनी ही क़ौमों को इनसे पहले हलाक कर चुके हैं, जो इनसे कहीं बढ़ कर थीं साज़ व सामान और शान व शौकत में!"

क़ुरैशे मक्का को मालूम होना चाहिये कि क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह और क़ौमे शुऐब जो अपने-अपने रसूल की दावत को ठुकरा कर हलाकत से दो-चार हुईं वह दुनियवी शान व शौकत और माल व अस्बाब के ऐतबार से इनसे कहीं बढ़ कर थीं।

आयत 75

قُلۡ مَنۡ کَانَ فِی الضَّلٰلَۃِ فَلۡیَمۡدُدۡ لَہُ الرَّحۡمٰنُ مَدًّا ۚ کَ

"(ऐ नबी ﷺ!) आप इनको बता दीजिये कि जो कोई गुमराही में पड़ जाता है तो रहमान उसे बहुत ज़्यादा ढील दे देता है।"

यह अल्लाह तआला का क़ायदा और क़ानून है कि जो शख्स फ़हम व शऊर के बावजूद गुमराही में पड़ना पसंद कर लेता है तो वह उसकी रस्सी दराज़ करता है और उसे दुनियवी नेअमतों से नवाज़ता चला जाता है।

حٰۤی اِذَا رَاَوۡا مَا یُوۡعَدُوۡنَ اِمَّا الۡعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَۃَ ؕ

"यहाँ तक कि जब वह देख लेंगे जिसकी उन्हें वईद दी जा रही है, ख्वाह अज़ाब हो या क़यामत!"

فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ــ75

"तब इन्हें मालूम हो जाएगा कि कौन है मक़ाम व मरतबे में बदतर और (कौन है) लाव लश्कर के ऐतबार से कमज़ोर तर।"

दुनियवी ज़िंदगी तो एक सराब की मानिन्द है। या इसकी मिसाल एक स्टेज ड्रामे की सी है जिसमें मुख्तलिफ़ किरदारों के मुख्तलिफ़ बहरूप नज़र आते हैं। मगर जब आख़िरत में हक़ीक़त खुल कर सामने आएगी तब इन्हें पता चलेगा कि असल में मक़ाम व मरतबा और ताक़त व क़ुव्वत के लिहाज़ से कौन बढ़ कर था? मोहम्मद ﷺ या अबु जहल?

आयत 76

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۭ

"और अल्लाह बढ़ाता है उन लोगों को हिदायत में जिन्होंने हिदायत इख्तियार की।"

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ــ76

"और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ बेहतर हैं आपके रब के नज़दीक बदले के ऐतबार से भी और बेहतर है अंजाम के ऐतबार से भी।"

ये माल व दौलते दुनिया सब यहीं की चीज़ें हैं और यहीं रह जाएँगी। बक़ा और दवाम अगर किसी चीज़ को है तो वह नेक अमाल हैं। इंसान के साथ आलमे आख़िरत में भी नेक आमाल ही जाएँगे। ये बदले के ऐतबार से भी बेहतर हैं और इस ऐतबार से भी कि बिलआख़िर हर किसी ने लौट कर अपने इन्हीं आमाल के पास ही जाना है। जब कोई नेक शख्स जन्नत में पहुँचेगा तो अपने नेक आमाल को जन्नत की नेअमतों की शक्ल में अपना मुन्तज़िर पाएगा। वहाँ उसे बताया जाएगा कि ये नेअमतें दरअसल तुम्हारे वह नेक आमाल हैं जो तुमने दुनिया में सरअंजाम दिये थे। अल्लाह तआला की रहमत और मेहरबानी से इन्होंने जन्नत की इन नेअमतों की शक्ल इख्तियार कर ली है।

आयत 77

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ؕ ــ77

"क्या आपने उस शख्स को देखा जिसने हमारी आयात का कुफ़्र किया और कहा कि मुझे (आख़िरत में भी) माल और औलाद से लाज़िमन नवाज़ा जाएगा!"

ये भी वही मज़मून है जो सूरतुल कहफ़ के पाँचवें रुकूअ (आयत 36) में दो अश्खास के मकालमे के सिलसिले में गुज़र चुका है। वहाँ भी बिल्कुल इसी सोच के हामिल मालदार शख्स का ज़िक्र है जिसने अल्लाह के नेक बन्दे को मुखातिब करके कहा था: {وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا} कि मैं तो नहीं समझता कि क़यामत वाक़ई बरपा होगी, लेकिन बिलफ़र्ज़ अगर ऐसा हुआ भी तो मैं दुनिया की तरह वहाँ भी नवाज़ा जाऊँगा और तुम जो यहाँ जूतियाँ चटखाते फ़िरते हो वहाँ भी इसी हाल में रहोगे।

आयते ज़ेरे नज़र में यही नज़रिया क़ुरैशे मक्का के हवाले से दोहराया गया है। उनका ख्याल था कि हम जो पुर तअय्यश ज़िन्दगी के मज़े ले रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह हम से खुश है। चुनाँचे हमें आख़िरत में भी इसी तरह से कसरते माल व औलाद से नवाज़ा जाएगा।

इन अल्फ़ाज़ का एक मफ़हूम यह भी मुराद लिया जा सकता है कि वह इसी दुनिया में आईन्दा भी कसरते माल व औलाद की तवक्क़ो लिये बैठे थे, मगर मुझे उन मुफस्सरीन की राय से इत्तेफ़ाक़ है जिनके नज़दीक यह उनकी आख़िरत की तवक्क़ो का ज़िक्र है।

आयत 78

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۙ﴿78﴾

"क्या वह गैब पर मुत्तलाअ हो चुका है? या उसने रहमान से कोई अहद ले रखा है?"

जो शख्स ऐसे दावे करता है आख़िर उसके इन दावों की दलील क्या है? क्या उसने गैब में झाँक कर देख लिया है? या अल्लाह तआला से वह कोई क़ौल व क़रार ले चुका है?

आयत 79

كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ

"हरगिज़ नहीं! हम लिख रखेंगे जो कुछ वह कह रहा है"

हम ऐसे शख्स की एक-एक बात को लिख कर महफ़ूज़ कर लेंगे ताकि उससे पूरी तरह जवाबदेही की जा सके।

وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۙ﴿79﴾

"और उसके लिए हम अज़ाब को बढ़ाते चले जायेंगे।"

आयत 80

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿80﴾

"और हम वारिस होंगे उस सब कुछ के जिसका वह ज़िक्र कर रहा है और वह आएगा हमारे पास अकेला ही।"

उसका दुनियवी माल व मताअ तो सब हमारी विरासत में आ जाएगा और जब उसे हमारी अदालत में पेश होने के लिये लाया जाएगा तो वह बिल्कुल यका व तन्हा होगा। माल व औलाद, खदम व हशम, क़ौम व क़बीला, हममशरब व हाशिया नशीन वगैरह में से कोई भी उसके साथ नहीं होगा।

आयत 81

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۙ﴿81﴾

"और इन्होंने बना रखे हैं अल्लाह के सिवा दूसरे मअबूद ताकि वह इनके लिये मददगार बनें।"

इनका ख्याल है कि इनके ये मअबूद इनके लिये पुश्त पनाह साबित होंगे और इन्हें अल्लाह के अज़ाब से छुडा लेंगे।

आयत 82

كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ

"हरगिज़ नहीं! वह तो इन लोगों की इबादत का इन्कार कर देंगे"

ये मज़मून कुरान में बार-बार आया है कि वह हस्तियाँ जिन्हें ये लोग अल्लाह का शरीक़ ठहराते रहे होंगे, वह फ़रिश्ते हों, औलिया अल्लाह हों या अम्बिया हों, क़यामत के दिन वह सब ऐसे मुशरिकीन से इज़हारे

बराअत कर देंगे और कहेंगे कि हमें तो मालूम ही नहीं था कि तुम लोग दुनिया में हमारी परस्तिश करते रहे हो, हमसे दुआएँ माँगते रहे हो और समझते रहे हो कि हम तुम लोगों को अल्लाह के अज़ाब से छुडा लेंगे!

وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّاۦ 82

"और (वहाँ) वह इन लोगों के मुखालिफ़ हो जायेंगे।"

आयात 83 से 98 तक

اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ تَـؤُزُّهُمْ اَزًّا 83 فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا 84 يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا 85 وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا 86 لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا 87 وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا 88 لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـــًٔا اِدًّا 89 تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا 90 اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا 91 وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ۭ 92 اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ۭ 93 لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۭ 94 وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا 95 اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا 96 فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا 97 وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُـحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا 98

आयत 83

اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ تَـؤُزُّهُمْ اَزًّا 83

"क्या आपने देखा नहीं कि हम काफ़िरों पर श्यातीन को भेजते रहते हैं और वह उन्हें ख़ूब-ख़ूब उकसाते हैं!"

चूँकि ऐसे लोग खुद श्यातीन की रफ़ाक़त इख्तियार करते हैं इसलिये हम श्यातीन को उन पर मुस्तक़िल तौर पर मुसल्लत कर देते हैं ताकि वह उन्हें गुनाहों और सरकशी पर मुसलसल उभारते रहें।

आयत 84

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ

"तो आप इनके ख़िलाफ़ (फ़ैसले के लिये) ज़ल्दी ना कीजिये।"

उजलत की नफ़ी पर मब्नी यह मज़मून इस सूरत में यहाँ दूसरी मरतबा आया है। आयत 64 में रसूल अल्लाह ﷺ को क़ुरान मजीद के बारे में जल्दी करने से मना फ़रमाया गया था कि वही के सिलसिले में आप ﷺ का शौक़ अपनी जगह मगर अल्लाह की हिकमत और मशीयत यही है कि इसकी तंज़ील एक ख़ास तदरीज से हो। अब आयत ज़ेरे नज़र में फ़रमाया जा रहा है कि आप कुफ्फ़ारे मक्का के बारे में ऐसा ख्याल दिल में ना लायें कि इन्होंने ज़ुल्म व सरकशी की इन्तहा कर दी है, इसलिये इनका फ़ैसला चुका देना चाहिये। सूरतुल अनआम और उसके बाद सब मक्की सूरतों में मुसलसल क़ुरैशे मक्का की साज़िशों, कट-हुज्जतियों और मुखालफ़ाना सरगर्मियों की तफ़सीलात बयान हुई हैं, मगर इसके बावजूद फ़रमाया जा रहा है कि अभी आप इनके बारे में फ़ैसले के लिये जल्दी ना कीजिये।

اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا 84

"हम इनकी पूरी-पूरी गिनती कर रहे हैं।"

हमारे यहाँ हर काम एक फ़ितरी तदरीज और बाक़ायदा निज़ामुल औक़ात के तहत तय पाता है। चुनाँचे इनके बारे में फ़ैसला भी हम अपनी मशीयत और हिकमत के मुताबिक़ करेंगे। इनका एक-एक अमल लिखा जा रहा है, इनकी एक-एक हरकत रिकॉर्ड हो रही है, इसी रिकॉर्ड के मुताबिक़ इनसे जवाबदेही होगी और बिलआखिर इनके करतूतों की सज़ा इन्हें मिल कर रहेगी।

आयत 85

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۝85

"(ज़रा तसव्वुर करें उस दिन का) जिस दिन अहले तक़वा को हम जमा करके लायेंगे रहमान की तरफ़ वफ़ूद की सूरत में।"

अल्लाह तआला के यहाँ अहले तक़वा का मेहमानों की तरह इस्तक़बाल किया जाएगा, जैसे सरकारी सतह पर वफ़ूद का इस्तक़बाल किया जाता है।

आयत 86

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝86

"और मुजरिमों को हम हाँक कर ले जायेंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे।"

उस दिन मुजरिमों को जानवरों की तरह हाँक कर जहन्नम के घाट पर ले जाया जाएगा, इस हालत में कि प्यास की शिद्दत से उनकी जान पर बनी होगी।

आयत 87

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝87

"उस दिन किसी को शफ़ाअत का इख्तियार नहीं होगा सिवाय उसके जिसने रहमान से कोई अहद हासिल कर लिया हो।"

उस दिन कोई किसी की शफ़ाअत ना कर सकेगा और कोई शफ़ाअत किसी के काम नहीं आएगी, सिवाय उस शख्स के जिसने अल्लाह तआला के साथ अपना अहद निभाया हो। जिसने अपनी ज़िंदगी अल्लाह तआला की फ़रमा-बरदारी, इताअत और बंदगी में बसर की हो (सिवाय उन कोताहियों और लग्ज़िशों के जो बशरी कमज़ोरियों के तहत सरज़द हुई हों)। ऐसे लोगों के लिये तो शफ़ाअत मुफ़ीद हो सकती है, लेकिन वह लोग जो अपनी ज़िन्दगियों में मुस्तक़लन अल्लाह के अहद की ख़िलाफ़ वर्ज़ियाँ करते रहे, जिन्होंने अपनी ज़िन्दगियों का रुख मुतअय्यन करते हुए अल्लाह की मर्ज़ी और उसके अहकाम को मुसलसल नज़र अंदाज़ किये रखा, ऐसे लोगों के लिये किसी की कोई शफ़ाअत कारआमद नहीं हो सकती। शफ़ाअत के बारे में यह मुसल्लमा उसूल हम आयतल कुर्सी के ज़ेल में मुलाहिज़ा कर चुके हैं कि जिसको अल्लाह की तरफ़ से इज़्ने शफ़ाअत हासिल होगा वह उसके हक़ में शफ़ाअत कर सकेगा जिसके लिये इज़्न होगा।

आयत 88

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ۝88

"और वह कहते हैं कि रहमान ने (अपने लिये) औलाद इख्तियार की है।"

आयत 89

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ۝89

"(देखो!) तुम ये एक बहुत भारी बात लाए हो।"

ये अक़ीदा घड के तुम लोग अल्लाह के हुज़ूर एक बहुत बड़ी गुस्ताख़ी के मुरतकिब हुए हो और तुम्हारी इस गुस्ताखी की वजह से:

आयत 90

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ﴿90﴾

"क़रीब है कि आसमान फट पड़ें, ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ धमाके के साथ गिर पड़ें।"

आयत 91

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۚ﴿91﴾

"कि इन्होंने रहमान के लिये औलाद क़रार दी।"

यहूदियों ने हज़रत उज़ैर अलै. और ईसाईयों ने हज़रत मसीह अलै. को अल्लाह का बेटा क़रार दिया, जबकि क़ुरैशे मक्का फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ मानते थे।

आयत 92

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ۭ﴿92﴾

"और यह बात रहमान के शायाने शान नहीं है कि वह (किसी को अपनी) औलाद बनाए।"

दरअसल औलाद की ख्वाहिश और ज़रूरत एक कमज़ोरी है। इस बात की वज़ाहत पहले भी की जा चुकी है कि औलाद की ज़रूरत इंसान को है और इसलिये है कि वह खुद फ़ानी है। हम जानते हैं कि हमें मरना है, इस दुनिया से हमारा नामो निशान मिट जाना है। अपनी इस कमज़ोरी के तहत हम औलाद की ख्वाहिश करते हैं। हम अपनी औलाद के ज़रिये दरअसल अपनी हस्ती का तसल्सुल चाहते हैं, औलाद की शक्ल में हम इस दुनिया में अपनी बक़ा चहाते हैं। मन्दर्जा ज़ेल अल्फ़ाज़ में पिरामिड्स (अहरामे मिस्र) के हवाले से यही फ़लसफ़ा बयान हुआ है:

Calm and self possessed,
Still and resolute,
The Pyramids echo into eternity,
They define cry of man's will,
To survive and conquer the storms of time.

यानि फ़राअना-ए-मिस्र ने अज़ीमुश्शान अहराम इसी ख्वाहिश के तहत तामीर किये थे कि इनकी वजह से उनका नाम इस दुनिया में ज़िन्दा रहेगा। बहरहाल इंसान यह समझते हुए भी कि वह फ़ानी है, किसी ना किसी तरीक़े से इस दुनिया में अपना दवाम चाहता है। इसी ख्वाहिश के तहत वह दुनिया में अपने अनमिट नक़ूश छोड़ना चाहता है और इसी लिये वह औलाद की ज़रूरत महसूस करता है। बहरहाल ऐसी कोई ज़रूरत हम इंसानों को ही लाहक़ हो सकती है। अल्लाह तआला ऐसी हर कमज़ोरी से पाक है। उसे किसी ऐसे सहारे की ज़रूरत भला क्योंकर होगी!

आयत 93

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿93﴾

"नहीं है कोई आसमानों और ज़मीन में मगर वह आएगा रहमान के हुज़ूर बन्दे की हैसियत से।"

हर इंसान किसे बाशद! अल्लाह तआला की अदालत में एक मुतीअ फ़रमान बन्दे की हैसियत से पेश होगा। हुज़ूर ﷺ भी एक बन्दे की हैसियत में अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होंगे। हम आप ﷺ को अबदुहू व रसूलुहू कहते और मानते हैं। आप ﷺ का फ़रमान है: لِوَاءُ الْحَمْدُ بِيَدِيْ कि उस रोज़ मैदाने हश्र में हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा। हुज़ूर ﷺ अल्लाह की अदालत में खड़े होकर उसकी हम्द बयान करेंगे। आपने फ़रमाया कि उस रोज़ मैं अल्लाह की जो हम्द बयान करूँगा वह आज बयान नहीं कर सकता। चुनाँचे मालूम हुआ कि उस रोज़ हर कोई अल्लाह के हुज़ूर अल्लाह का बंदा बन कर हाज़िर होगा। इसमें किसी को कोई इस्तशना हासिल नहीं होगा। चुनाँचे हज़रत ईसा अलै. से यह सवाल किया जाएगा: { يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰـهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ} "ऐ मरियम के बेटे ईसा! क्या तुमने कहा था लोगों से कि मुझे और मेरी माँ को भी मअबूद बना लेना, अल्लाह के सिवा?"

आयत 94

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿94﴾

"उसने इन सबका अहाता कर रखा है और पूरी-पूरी गिनती कर रखी है।"

इनमें से एक-एक उसकी नज़र में है। वह सब इंसानों का पूरी तरह अहाता किये हुए है। कोई एक फ़र्द भी उससे बच कर कहीं इधर-उधर नहीं हो सकेगा।

आयत 95

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿95﴾

"और क़यामत के दिन सबके सब आने वाले हैं उसके पास अकेले-अकेले।"

उस दिन हर फ़र्द का मुहास्बा ज़ाती हैसियत में होगा। ना माँ-बाप साथ होंगे, ना औलाद, ना बहन-भाई। ना शौहर के साथ बीवी और ना बीवी के साथ शौहर। ना कोई हिमायती, ना मददगार, ना कोई सिफ़ारशी। हर तरफ़ नफ्सी-नफ्सी का शोर होगा, हर शख्स को फ़िक्र होगी तो सिर्फ़ अपनी जान की!

मेरी किताब "साबक़ा और मौजूदा मुसलमान उम्मतों का माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल" के एक बाब का उन्वान है: "क़ुरान का क़ानूने अज़ाब।" इस बाब में दी गई तफ़सील का खुलासा यह है कि अल्लाह तआला का इज्तमाई अज़ाब जो क़ौमों पर आता है वह सिर्फ़ दुनिया में आता है, आख़िरत का अज़ाब फ़र्दन-फ़र्दन होगा। यानि क़ौमों का इज्तमाई मुहास्बा दुनिया में किया जाता है जबकि आख़िरत में हर शख्स का मुहास्बा उसकी ज़ाती और इन्फ़रादी हैसियत में होगा।

आयत 96

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿96﴾

"यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये, अनक़रीब उनके लिये रहमान (लोगों के दिलों में) मोहब्बत पैदा कर देगा।"

ये फ़रमान मक्के के कठिन हालात में मोमिनीन के लिये एक खुशख़बरी थी कि बिलाशुबह अभी अहले ईमान के लिये बहुत मुश्किल वक़्त है, उन्हें

हर तरफ़ से मुखालफ़त और तअन व तशनीअ का सामना है, लेकिन बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है जब यही लोग़ महबूबाने खलाइक़ होंगे। अबुबक्र रज़ि. की शख्सियत पर लोग अक़ीदत व मोहब्बत के फूल न्योछावर करेंगे, और बिलाल रज़ि. की ताज़ीम व तकरीम दिलों पर राज करेगी। एक हदीस में आता है कि "जब अल्लाह किसी बन्दे से मोहब्बत करता है तो वह जिब्राइल अलै. को बुला कर फ़रमाता है: मुझे अपने फ़लाँ बन्दे से मोहब्बत है, लिहाज़ा तुम भी उसे महबूब रखो। चुनाँचे जिब्राइल उसे महबूब रखते हैं, फिर वह आसमान में ऐलान कर देते हैं कि अल्लाह तआला फ़लाँ शख्स को महबूब रखता है, पस तुम सब भी उसको महबूब रखो। चुनाँचे आसमान वाले उससे मोहब्बत करने लग जाते हैं।" आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर उसकी मक़बूलियत ज़मीन में रख दी जाती है।"(1) यानि अहले ज़मीन के दिलों में उसकी मोहब्बत डाल दी जाती है और इस तरह अल्लाह का महबूब बंदा खल्क़े ख़ुदा का भी महबूब बन जाता है।

आयत 97

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ

"तो हमने आसान कर दिया है इस (क़ुरान) को आपकी ज़बान में"

क़ुरान की ज़बान सहले मुम्तनअ का ख़ूबसूरत नमूना है। आम क़ुरानी इबारत सलीस और आसान अरबी ज़बान में है। इसमें सक़ील (भारी) और मुश्किल अल्फ़ाज़ शाज़ ही कहीं नज़र आते हैं।

لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ـــ97

"ताकि आप बशारत दें इसके साथ मुत्तक़ीन को और ख़बरदार करें इसके साथ झगड़ालू क़ौम को।"

यानि आपकी दावत का ज़रिया और वसीला, आपकी तालीमात का मरकज़ व महवर और आपका आला-ए-इंक़लाब यही क़ुरान है। आप इसी के ज़रिये से वअज़ व तज़कीर का फ़रीज़ा अंजाम दें और इसी की मदद से इंज़ार व तब्शीर का हक़ अदा करें: {فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ} (सूरह क़ाफ़:45) "तो आप नसीहत करते रहें क़ुरान के साथ हर उस शख्स को जो डरता है मेरी वईद से।" क़ुरान एक मौअस्सर और जामेअ वअज़ भी है और तज़किया-ए-नफ्स के लिये शाफ़ी व काफ़ी दवा भी। इस हक़ीक़त का ऐलान सूरह युनुस में इस तरह किया गया है: {يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ} (आयत 57) "ऐ लोगो! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के रोग) की शिफ़ा और हिदायत, और अहले ईमान के हक़ में (बहुत बड़ी) रहमत।" और सूरह बनी इसराइल की आयत 82 में यही मज़मून इन अल्फ़ाज़ में बयान हुआ है: {وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ} "और हम नाज़िल करते हैं क़ुरान से (वह चीज़) जो शिफ़ा और रहमत है मोमिनीन के लिये।"

आयत 98

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ـــ98

"और इनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमों को हलाक कर दिया। क्या आप महसूस करते हैं उनमें से किसी को भी या आप सुनते हैं उनकी कोई भनक भी?"

क्या आज क़ौम-ए-समूद की कहीं आहट सुनाई देती है? या क़ौम-ए-आद का कोई नामो-निशान नज़र आता है? माज़ी की तमाम नाफ़रमान क़ौमों को सफ़ह-ए-हस्ती से नेस्तो नाबूद करके नस्यम मन्सिया कर दिया गया है। चुनाँचे क़ुरैशे मक्का जो आज कुफ़्र व सरकशी में हद से बढ़े जा रहे हैं वह भी इसी अंजाम से दो-चार हो सकते हैं।

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایا کم بالآیات والذکر الحکیم